RESEARCH INQUIRY
(An International Peer Reviewed Multidisciplinary Referred Research Journal)
Impact Factor :
ISSN

"माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

डॉ.सभाजीत मौर्य
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, कौशल्या पी.जी. कालेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर

सारांश : प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता और उसके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक–सह–सर्वेक्षण विधि अपनाई गई तथा आँकड़ों के संकलन हेतु डॉ. आर.पी. सिंह एवं एस.एन. शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद से 300 शिक्षक एवं 600 विद्यार्थी चयनित किए गए। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करते हुए माध्य, मानक विचलन, टी–परीक्षण तथा सहसम्बन्ध गुणांक जैसी विधियों का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। इससे संकेत मिलता है कि शिक्षकों की बेहतर शिक्षण–अभिक्षमता विद्यार्थियों के अधिगम एवं शैक्षिक प्रदर्शन को उन्नत करने में सहायक होती है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का निरंतर विकास आवश्यक है।

प्रमुख शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, ज्ञान, दक्षता, प्रशासनिक दृष्टिकोण, माध्यमिक शिक्षक।

1.1 प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा एक ओर प्राथमिक शिक्षा तथा दूसरी ओर उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से जुड़ा हुआ है। वे लोग जो कि कार्य की दुनिया में प्रवेश करने वाले हैं, की जरूरतों को माध्यमिक शिक्षा जो इस शैक्षिक सीढ़ी की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पायदान है, का उच्च शिक्षा के संस्थानों में प्रवेश के लिए आवश्यक है, साथ ही साथ यह अन्तिम स्तर है, जिसका सफलतापूर्वक पूर्ण होना जरूरी है। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जोर दिया जा रहा है कि माध्यमिक शिक्षा, शिक्षकों के माध्यम से छात्रों को विभिन्न विज्ञान, मानवता एवं सामाजिक विज्ञान के पात्रों से परिचित कराना प्रारम्भ करता है। यह बच्चों को ऐतिहासिक ज्ञान एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोंण प्रदान करने में तथा उन्हें एक नागरिक के अधिकार एवं संवैधानिक जिम्मेदारियों को समझने में भी सहायता प्रदान करता है।

शैक्षिक योजनाकर्ताओं, शैक्षिक शासकों, शैक्षिक शोधकर्ताओं, शिक्षण शैक्षिक योजनाकर्ताओं, शैक्षिक शासकों, शैक्षिक शोधकर्ताओं, शिक्षण अध्यापकों एवं प्रबन्धकों के समक्ष एक ऐसी माध्यमिक शिक्षा का चिंतन करने एवं संगठन करने, जो कि दोनों जो इसकी माँग को बढ़ाने साथ ही साथ वास्तविक एवं गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराने की महान चुनौती है। जबकि वास्तविकता में, उच्च शिक्षा प्राप्त करने या लाभदायक रोजगार प्राप्त करने में एकमात्र रास्ता उनके पूर्ण सक्षमता को विकसित करना है। अतः माध्यमिक स्तर पर भी सभी छात्रों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराना एक महती आवश्यकता है। सम्पूर्ण विश्व में माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन एवं पुर्नर्निर्माण के लिए विभिन्न विकल्पों, प्रयासों तथा तकनीकी को सामने रखा जा रहा है। माध्यमिक शिक्षा के शोध में भी इस दिशा में अच्छे प्रयास हो रहे है। सम्पूर्ण की तरह भारत में भी शोध कार्यों, शिक्षा में शोध, माध्यमिक शिक्षा में शोध को सम्मिलित करते हुए, विभिन्न शोध संस्थानों एवं संगठनों में क्रमशः बढ़ते हुए आगे जाता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। जबकि माध्यमिक शिक्षा के सुधारों के संदर्भ में शोधों के अध्ययन की दिशा एवं प्रकारों के चलन को सावधानीपूर्वक पहचान कर देखे जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्र के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और इस प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में शिक्षक केंद्रीय स्थान रखता है। विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास को दिशा देने में शिक्षक का योगदान निर्णायक होता है। केवल विषय का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं हैय एक प्रभावी शिक्षक में विषय–वस्तु को सरल ढंग से प्रस्तुत करने, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने, उचित शिक्षण विधियों का चयन करने तथा सीखने के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करने

की क्षमता भी होनी चाहिए। इसलिए शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्व मानी जाती है। शिक्षण अभिक्षमता से आशय शिक्षक की उस समग्र क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह अपने ज्ञान, कौशल, अनुभव और व्यावसायिक दक्षताओं का उपयोग करते हुए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बना सकता है। एक सक्षम शिक्षक विषय–वस्तु को विद्यार्थियों के स्तर और रुचि के अनुरूप प्रस्तुत करता है तथा उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण रणनीतियों में आवश्यक परिवर्तन करता है। ऐसी क्षमता शिक्षक को कक्षा की विविध परिस्थितियों का प्रभावी ढंग से सामना करने और विद्यार्थियों में सीखने की रुचि विकसित करने में सहायता करती है।

शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी दिखाई देता है। जब शिक्षक विषय को स्पष्ट उदाहरणों, उपयुक्त शिक्षण विधियों और सक्रिय अधिगम गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है, तब विद्यार्थियों की समझ अधिक गहरी और स्थायी बनती है। इसके विपरीत, शिक्षण प्रक्रिया यदि केवल पारंपरिक व्याख्यान और रटने तक सीमित रहती है, तो विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता तथा सीखने की प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है।

शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थियों द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के रूप में समझा जा सकता है। यह सामान्यतः परीक्षा परिणाम, प्राप्त अंकों, विषयगत दक्षता तथा अर्जित ज्ञान के आधार पर निर्धारित की जाती है। विद्यार्थियों की उपलब्धि केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि, अध्ययन की आदतों, प्रेरणा और विशेष रूप से शिक्षक की शिक्षण दक्षता जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है।

अतः यह स्पष्ट किया जा सकता है कि शिक्षण अभिक्षमता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। दक्ष, संवेदनशील और विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षक न केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, आत्मविश्वास, रचनात्मकता, अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण का भी विकास करता है। इसी कारण वर्तमान अध्ययन में शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध एवं उसके प्रभाव का अध्ययन का प्रयास इस शोध अध्ययन में किया गया है।

1.2 शोध अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत शोध समस्या की प्रासंगिकता को शिक्षक, विद्यालयी प्रशासन तथा विद्यार्थियोंकृइन तीनों प्रमुख पक्षों के संदर्भ में समझा जा सकता है। शिक्षक की दृष्टि से माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यदि शिक्षकों में आवश्यक शिक्षण–कौशल, विषय–वस्तु के प्रभावी प्रस्तुतीकरण तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण करने की पर्याप्त क्षमता है, तो विद्यार्थियों के अधिगम स्तर एवं शैक्षिक प्रदर्शन में सकारात्मक परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। अतः शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का अध्ययन करके उनकी वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सकता है तथा आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण एवं सुधारात्मक उपाय सुझाए जा सकते हैं।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी यह अध्ययन उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता की स्थिति के संबंध में वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यालय प्रशासन तथा संबंधित शैक्षिक संस्थाएँ शिक्षकों के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, अभिविन्यास कार्यक्रम तथा क्षमता–विकास गतिविधियों की योजना अधिक प्रभावी ढंग से तैयार कर सकती हैं। इससे शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा विद्यालयी शैक्षिक वातावरण को अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायता मिलेगी।

विद्यार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण से देखा जाए तो शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य घनिष्ठ संबंध स्थापित होने की संभावना रहती है। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों की समझ, रुचि, सहभागिता तथा सीखने की क्षमता को विकसित करने में सहायक होता है। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षित उन्नति के लिए आवश्यक रणनीतियों की पहचान करने में भी सहायक हो सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन

शिक्षक–क्षमता के मूल्यांकन के साथ–साथ विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.4 अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

1.5 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

भट्टाचार्य (2022) हाईस्कूल के विद्यार्थियों की विभिन्न अभिक्षमताओं पर एक क्रास सेक्सनल अध्ययन इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न अभिक्षमताओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना जैसे– शाब्दिक तर्कशक्ति, अंग्रेजी का उपयोग, आदर्श या भाववाचक तर्क शक्ति और वैज्ञानिक अभिक्षमता कक्षा 8 के विद्यार्थियों के उपलब्धियों को स्कूल के स्तर पर निदानात्मक मूल्य को मापना। अध्ययन में पाया गया कि लड़के–लड़कियों की तुलना में शाब्दिक तर्कशक्ति में बेहतर हैं। ग्रामीण बच्चों की तुलना में शहरी क्षेत्र के बच्चे शाब्दिक तर्क शक्ति में अच्छे हैं।

मुखोपाध्याय, दुलाल (2021) विद्यार्थियों की विद्योपार्जन अभिप्रेरणा एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर विज्ञान अभिक्षमता का एक क्रास सेक्सनल अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्योपार्जन अभिप्रेरणा और वैज्ञानिक अभिवृत्ति और वैज्ञानिक अभिक्षमता के निर्माण करना और प्रमाणिक मापनी द्वारा मापना। अध्ययन में शहरी बालक ग्रामीण बालिकों की तुलना में बेहतल दिखायी दिये। कुछ मामलों में लड़कियाँ वैज्ञानिक अभिवृत्ति, विद्योपार्जन अभिप्रेरणा की तुलना में बेहतर पायी गयी। दोनों मध्य धनात्मक सार्थक अन्तर पाया गया।

शर्मा, मुक्ता और मेहता, मन्जू (2019) मनोवैज्ञानिक समंजन–अभिरूचि, अभिक्षमता और चुने गये। इस अध्ययन का उद्देश्य अभिरूचि, अभिक्षमता और चुने गये पाठ्यक्रम के मध्य विभिन्न प्रभावों का मनौवैज्ञानिक समंजन का परीक्षण करना था। परिणाम में पाया गया कि चुने गये पाठ्यक्रम के मध्य विभिन्न मनोवैज्ञानिक संमजन विषयों में रखते हैं। जैसे विज्ञान और वैज्ञानिक अभिरूचि की तुलना में मनौवैज्ञानिक समंजन का स्तर बहुत कम सार्थकता का अन्तर था। मनौवैज्ञानिक समंजन पर वैज्ञानिक अभिक्षमता और चुने गये पाठ्यक्रम के मध्य कोई प्रभाव दिखायी नहीं था।

पूर्ववर्ती अध्ययनों में अदावत (1952), बनर्जी (1956), सिंह (1974) तथा मृथा (1980) आदि ने शिक्षण–अभिक्षमता से संबंधित शोध किए हैं। इन अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव अभी पर्याप्त रूप से अध्ययनित नहीं है। इसी शोध–अंतराल को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई है।

1.6 शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा अपने शोधकार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.7 जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद जौनपुर के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का चयन

किया गया है। कुल 300 शिक्षकों का चयन किया जिनमें 150 पुरुष एवं 150 महिला शिक्षक है तथा कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों को शोधकर्ता द्वारा 22 विकास खण्डों में वर्गीकृत किया गया है। शोधार्थी ने 16 विकास खण्डों से दो विकास खण्डों जलालपुर एवं मड़ियाहूँ विकास खण्ड का चयन लॉटरी विधि द्वारा किया है तथा प्रत्येक विकास खण्डों से दस–दस अर्थात् कुल 20 विद्यालयों का चयन कर प्रत्येक विद्यालय से उसके उपस्थिति रजिस्टर की सहायता से सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं को अलग–अलग बाँटा गया उसके बाद निर्धारित विद्यालय से 150 शिक्षक और 150 शिक्षिकाओं का चुना गया है।

1.8 अध्ययन के उपकरण

अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु दो प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया। शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता के आकलन के लिए शिक्षक अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसे डॉ. आर. पी. सिंह एवं एस.एन. शर्मा द्वारा मानकीकृत किया गया है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निर्धारित करने के लिए कक्षा 10वीं की वर्ष 2022 की परीक्षा के प्राप्त परिणामों को आधार बनाया गया। इन उपकरणों एवं प्राप्त उपलब्धि–अंकों के माध्यम से शिक्षण–अभिक्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया।

1.9 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, टी–मूल्य एवं कार्ल पियरसन की प्रोडक्ट–मोमेन्ट विधि द्वारा सह–सम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी है।

1.10 प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

परिकल्पना 1–

तालिका संख्या–01

पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धित टी–मूल्य विश्लेषण

विद्यालय शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य(df=298)
पुरुष	150	74.33	14.23	**0.95** (0.01 स्तर पर असार्थक)
महिला	150	75.80	12.46	

तालिका से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार पुरुष शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का औसत 74.33 तथा महिला शिक्षकों का औसत 75.80 पाया गया। दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 14.23 एवं 12.46 रहे। समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता जाँचने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.95 रहा, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध टी–मूल्य 2.58 से कम है। अतः प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं माना गया। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है तथा संबंधित शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 2–

तालिका संख्या–02

शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता सम्बन्धित टी–मूल्य विश्लेषण

विद्यालय शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य(df=298)
शहरी	150	74.87	14.04	**0.25** (0.01 स्तर पर असार्थक)
ग्रामीण	150	75.27	13.71	

तालिका संख्या 02 के अनुसार शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का औसत 74.87 तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों का औसत 75.27 पाया गया। दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 14.04

एवं 13.71 हैं। शहरी और ग्रामीण शिक्षकों के बीच प्राप्त टी–मूल्य 0.25 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणीबद्ध टी –मूल्य 2.58 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के औसत में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता लगभग समान स्तर की है तथा दोनों के बीच सार्थक अंतर विद्यमान नहीं है।

परिकल्पना 3–

तालिका संख्या–03

शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता व विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध विश्लेषण

विद्यालय शिक्षक	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शिक्षण अभिक्षमता	300	**0.429**	(0.01 स्तर पर सार्थक)

तालिका के अनुसार शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.429 प्राप्त हुआ है। यह धनात्मक सहसम्बन्ध दर्शाता है कि शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता में वृद्धि के साथ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी सामान्यतः सुधार की प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्राप्त सहसम्बन्ध 0.01 सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है और परिकल्पना 3 स्वीकार की जाती है।

1.11 निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसी प्रकार शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता भी लगभग समान रही। अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष यह रहा कि शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है।

1.12 विवेचना

शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता में पाया गया अल्प अंतर यह संकेत देता है कि शिक्षक दोनों क्षेत्रों में लगभग समान स्तर की व्यावसायिक क्षमता रखते हैं। साथ ही, शिक्षण–अभिक्षमता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंध यह स्पष्ट करता है कि प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण विद्यार्थियों के बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन के लिए महत्त्वपूर्ण आधार है।

1.13 शैक्षिक निहितार्थ

1. विद्यालय प्रशासन को शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता बढ़ाने के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं क्षमता–विकास कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।
2. शिक्षकों को अपने विषय–ज्ञान, शिक्षण–कौशल, तार्किक क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक समझ को निरंतर विकसित करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को अपनी शिक्षण योजनाओं एवं रणनीतियों में आवश्यक सुधार करते रहना चाहिए।

1.14 सुझाव

1. अध्ययन को उत्तर प्रदेश के अन्य माध्यमिक विद्यालयों एवं व्यापक क्षेत्रों में भी दोहराया जा सकता है।
2. कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. शिक्षण–अभिक्षमता तथा शिक्षण–प्रभावशीलता के मध्य संबंध पर आगे शोध किया जा सकता है।

4. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के सरकारी तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन भी उपयोगी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गैरेट, हेनरी ई.(2014).''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग', कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. शर्मा,आर.ए.(2003).शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी,आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. भट्टाचार्य (2022).हाई स्कूल के विद्यार्थियों की विभिन्न अभिक्षमताओं पर एक क्रास सेक्सनल अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष–31, अंक 3, जनवरी–2022.
4. शर्मा, मुक्ता और मेहता, मन्जू (2019).मनोवैज्ञानिक समंजन–अभिरूचि, अभिक्षमता और चुने गये पाठ्यक्रम के मध्य विभिन्न प्रभाव का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वोल्यूम 2(5),जुलाई–दिसम्बर–2019.
5. मुखोपाध्याय, दुलाल (2021). विद्यार्थियों की विद्योपार्जन अभिप्रेरणा एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर विज्ञान अभिक्षमता का एक क्रास सेक्सनल अध्ययन, जर्नल ऑफ सोशियो एजुकेशन एण्ड कल्चरल रिसर्च, वोल्यूम 3(7), जुलाई–दिसम्बर–2021, पेज– 93–96.

❐❐❐

RESEARCH INQUIRY